International Journal of Applied Research 2023; 9(4): 215-218

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(4): 215-218
www.allresearchjournal.com
Received: 21-02-2023
Accepted: 04-04-2023

Dr. Akhilesh Kumar Tripathi
Assistant Professor,
Department of Sanskrit, Amity School of Liberal Arts, Amity University Haryana, India

Corresponding Author:
Dr. Akhilesh Kumar Tripathi
Assistant Professor,
Department of Sanskrit, Amity School of Liberal Arts, Amity University Haryana, India

संस्कृत नाट्य परम्परा में रामः एक अनुशीलन (भवभूति के परिप्रेक्ष्य में)

Dr. Akhilesh Kumar Tripathi

प्रस्तावना

संस्कृत का नाट्य-साहित्य अत्यन्त प्राचीन तथा समृद्ध रहा है। उपजीव्य आदि महाकाव्य रामायण की रामकथा से साहित्य का कोई अंग छूटा नहीं है। रामकथा को लेकर नाटकों के अभिनय की परम्परा बहुत प्राचीन है तथा रामकथा से संबंधित अनेक नाटक आज उपलब्ध हैं। इन नाटकों का राम कथा परम्परा की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। महाकाव्यों की अपेक्षा नाटकों में रामकथा बहुत सी बदल दी गई है। फलस्वरूप एक ओर आधिकारिक रामकथा के अनेक स्थलों को नाटकों मे नहीं के बराबर स्थान है तो दूसरी ओर नये-नये पात्रों की सृष्टि रामकथा के सन्दर्भ में हुई है। इसके अतिरिक्त संस्कृत नाटकों में आयी रामकथा की विशेषताएँ डॉ. कामिल बुल्के के अनुसार निम्नलिखित है -

1. विस्तृत वर्णन और सम्वाद।
2. आदर्शवाद का प्रभाव
3. श्रृंगार की व्यापकता
4. अद्भुत रस का प्रवेश।

यह प्रसन्नराघव आश्चर्य चूड़ामणि तथा अद्भुत दर्पण में विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है।

5. पात्रों द्वारा अन्य पात्रों का रूप धारण।

महावीरचरित तथा अनर्घराघव में शूर्पणखा मंथरा का रूप धारण करती है। उदात्तराघव में सुग्रीव को धोखा देने के उद्देश्य से एक राक्षस हनुमान का रूप धारण करके उनके पास आता है, उसी प्रकार कई छद्मवेषी राक्षस भरत और राम से छल कपट करने का निष्फल प्रयास करते हैं। महानाटक में रावण अपने हाथ में अपने दस शीर्ष लिए हुए राम के रूप में सीता के पास जाता है। आश्चर्य चूड़ामणि में रावण और उसका सारथि राम तथा लक्ष्मण का रूप धारण कर सीता का हरण करते हैं तथा शूर्पणखा सीता के रूप में राम के पास जाती है। इस प्रकार से रामाधारित अनेकानेक संस्कृत में नाटक लिखे गए जिनकी सुदीर्घ परम्परा रही है जो निम्नवत है -

1. प्रतिमानाटक - प्रतिमा नाटक भास रचित है। इस नाटक में कालिदास के अनुसार दिलीप, रघु, अज, दशरथ की वंशावली दी गई है।
2. अभिषेक - यह नाटक भी भास रचित है। बालिवध से लेकर राम-राज्याभिषेक तक की रामकथा इस नाटक में बहुत कम परिवर्तन के साथ आयी है। प्रतिमा नाटक में राम को पुरुष रूप में देखा गया है, परन्तु इस नाटक में अनेक प्रसंगों में उन्हें विष्णु रूप में तथा सीता को अग्नि परीक्षा के प्रसंग में लक्ष्मी रूप में देखा गया है। अन्य एक स्थान पर राम तथा लक्ष्मण दोनों के मायामय शीर्ष सीता को दिखलाये जाने का उल्लेख हैं
3. उदात्तराघव - अनंगहर्ष मायुराज की रचना सम्भवतः 8वीं शताब्दी ई. की है। उदात्तराघवके छः अंकों में राम के वनगमन से लेकर अयोध्या प्रत्यागमन तक की रामकथा आयी है।
4. कुन्दमाला - इस नाटक की रचना आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के बाद की तथा ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के पूर्व की बतलायी जाती है। धीरनाग नाटक के रचयिता हैं।

कुन्दमाला की कथावस्तु पर भवभूति के उत्तररामचरित का प्रभाव सुस्पष्ट है।

5. अनर्घराघव – मुरारि ने अनर्घराघव की रचना ई. सन् 900 ई. के लगभग की थी। इस नाटक में रामकथा से लेकर विश्वामित्र के आगमन से लेकर राम के अयोध्या प्रत्यागमन तथा अभिषेक तक की आयी है।

6. बालरामायण – 10वीं शताब्दी ई. में राजशेखर ने रामकथा सम्बन्धी सबसे विस्तृत नाटक बालरामायण की रचना की, जिसमें दस अंकों में सीता स्वयंवर से लेकर रामाभिषेक तक की कथा भवभूति तथा मुरारि के अनुकरण पर वर्णित है।

7. हनुमन्नाटक अथवा महानाटक – इस चौदह अंकों वाले नाटक को लेकर विद्वानों में सर्वाधिक वाद-विवाद है। हनुमन्नाटक अथवा महानाटक के दो भिन्न पाठ प्रचलित हैं। डॉ. सुशील कुमार के अनुसार हनुमनाटक के मूल की रचना दसवीं शताब्दी में हुई है।

8. आश्चर्यचूड़ामणि – डॉ. सुशील कुमार डे इस दक्षिण भारत के नाटक के नवीं शताब्दी के रचनाकाल में संदिग्धता व्यक्त करते हैं। इस नाटक में शूर्पणखा के आगमन से लेकर सीता का अग्नि परीक्षा तक की रामकथा सात अंकों में आयी है। इस नाटक में राम और सीता के पास एक अंगूठी और चूड़ामणि है, जिनकी सहायता से छद्मवेषी राक्षस राम और सीता के स्पर्शमात्र से अपना असली रूप धारण कर लेते हैं। इसी कारण इस नाटक का नाम आश्चर्यचूड़ामणि पड़ा है।

9. प्रसन्नराघव – जयदेव ने प्रसन्नराघव की रचना बारहवीं या तेरहवीं शताब्दी ई. में की थी। इस नाटक में सीता स्वयम्वर से लेकर राम के रावणवध के बाद अयोध्या प्रत्यागमन तक की कथा सात अंकों में वर्णित है।

10. उल्लाधराघव – इस नाटक की रचना तेरहवीं शताब्दी ई. के पूर्वार्द्ध में गुजरात निवासी सोमेश्वर ने की थी। उल्लाधराघव में बालकाण्ड के अन्त से लेकर युद्धकाण्ड के अन्त की रामकथा का वर्णन आया है।

11. अद्भुतदर्पण – दक्षिण भारतीय महादेव के इस नाटक में राम को एक एन्द्रजालिक दर्पण द्वारा लंका की घटनाऐं दिखलाई जाने का वर्णन है।

12. जानकी परिणय – इस नाटक के रचयिता दक्षिण भारतीय रामभद्र दीक्षित हैं। इसमें सीता का हरण करने के उद्देश्य से विराध राम का रूप धारण करता है तथा शूर्पणखा राम को रोकने के उद्देश्य से सीता का रूप धारण करती है।

इस प्रकार से राम को आधृत कर संस्कृत में अनेकशः रूप लिखे गए हैं।[1] इसी क्रम में मूर्धन्य कवि भवभूति ने भी राम को आधृत कर दो महान नाटक – (1) महावीरचरित एवं (2) उत्तररामचरित की आठवीं शताब्दी ई. के पूर्वार्द्ध में रचना किया है –

1. महवीरचरित – महावीर अर्थात् महान् वीर राम। यह नाटक वाल्मीकि-कृत् रामायण पर आधारित है और राम के शैशव से लेकर अभिषेक तक के प्रारंभिक जीवन का वर्णन करता है। वाल्मीकि की प्रेरणामय कविता तथा राम के प्रति भवभूति की आत्मनिष्ठ भक्ति ने कवि को यह प्रथम नाटक लिखने के लिए उत्स्फूर्त किया। संस्कृत भाष्यकारों तथा पांडुलिपियों के साक्ष्य से ऐसा प्रतीत होता है कि भवभूति ने 5 अंक, पद्य 46 तक लिखा था। उपलब्ध नाटक में सात अंक हैं। अवशिष्ट अंश दूसरों के द्वारा लिखा गया था।

भवभूति ने इस नाटक में महाकाव्य के कथानक को इस तरह प्रस्तुत किया है कि आवश्यक रूपरेखा यथावत् है, किन्तु नाटकीय उद्देश्य के अनुकूल सार्थक रूपान्तर समाविष्ट किये गये हैं। नाटक का प्रारंभ विश्वामित्र के आश्रम में होता है। राम और लक्ष्मण यहाँ पर राक्षसों से यज्ञ की रक्षा करने के लिए उपस्थित हैं और आगे राम दंडक वन जाने के लिए तैयार हो जाते हैं और उत्सुकतापूर्वक अपनी यात्रा की योजना बनाते हैं। इस प्रकार यह नाटक सात अंकों में पूर्ण हो जाता है।[2]

भवभूति ने इस बात की कोशिश की है कि इस नाटक में राम का प्रायः सम्पूर्ण चरित्र प्रस्तुत कर सके – उनके विवाह से लेकर रावण पर विजय तथा अयोध्या के सिंहासन पर राज्याभिषेक होने तक।

2. उत्तररामचरित – उत्तररामचरित में कवि के मस्तिष्क की परिपक्वता के कलाकारिता और नाटकीयता की भावना के मानव के मन और कतिपय गहन जीवनमूल्यों की गहरी समझ के सभी चिह्न हैं। नाटक का उद्देश्य राम के उत्तर-कालीन जीवन को प्रस्तुत करना है – राम राज्य से प्रारंभ करके सीतापरित्याग तक अंततः जहाँ राम और सीता का प्रेम व सुख से युक्त स्थायी मिलन होता है। यह नाटक महावीर-चरित से क्रमागत है, दोनों नाटक मिलकर रामायण की पूरी कथा आवृत कर लेते हैं।

अब हम भवभूति की नाट्यकला को समझते हुए दोनों नाटकों के आधार पर राम के वैयक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक मूल्यों को आधृत करते हुए राम विषयक अनुशीलन निम्नवत कर सकते हैं –

राम अत्यन्त विनम्र एवं साधु स्वभाव के हैं। उनकी विनम्रता तब तो पराकाष्ठा पर ही पहुँच जाती है, जब वे परशुराम के प्रति किये गये अपने शौर्य को इस बहाने से नहीं दिखलाना चाहते कि "अरे अभी तो बहुत देखना है इसलिये और कुछ दिखाओ।" राम को अपनी प्रशंसा प्रिय नहीं थी। यही कारण है कि जब गुप्तचर यह कहता है कि पुरवासी तथा नगर निवासी आपकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं तो वे यह कहते हैं कि यह तो मेरी केवल प्रशंसा हुई, कुछ दोष तो बताओ, जिससे उससे बचा जा सके – रामःअर्थवाद एवैषः। दोषं तु मे कथंचित्कथय, येनप्रतिविधीयते।[3]

महावीरचरित के नायक राम के समस्त कार्य-व्यापार विवेकपरक जीवनमूल्य से अनुप्राणित है। 'स्वभावटवैरी' 'त्रयीपरिध्वंसक' 'क्षात्रतेज-अपकर्षक' राक्षसराज रावण (म.च. 1/32) के अनुपमेय तपस्या के प्रति राम के विवेक में आदर है, सम्मान है – वह कहते हैं कि 'विद्वान होकर और तादृश वंश में जन्म लेकर भी रावण धर्ममार्ग से विमुख है, इस पर क्या कहें, सभी में सभी गुण नहीं होते हैं।

---

1 रामकथा के पात्र – डॉ. भ.ह. राजूरकर, पृ. 59-63

2 महावीरचरित प्रस्तावना, 1.7

3 उत्तररामचरित

गुरु भक्ति के आवेश में क्रोधावेशित परशुराम धनुष-भंग करने वाले राम को पूँछते हुए आ रहे हैं राम विदेही नगरी के कन्या अन्तःपुर में हैं। कोप-उद्विग्न परशुराम के आने की सूचना विवेकी राम को मिलती है तो वह कहते हैं कि - महाभाग्यता के निधान, त्रिपुरहर के शिष्य, वेदाध्ययन से शुद्ध सात्त्विक चरित्रयुक्त भृगुपति द्रष्टव्य हैं और मुझे देखना भी चाहते हैं किन्तु इधर यह मुग्धा स्वाभाविक लज्जा का भी त्याग करके भय से शालीनता में लिपटा हुआ प्रेम प्रकट कर रही है-

महाभाग्यमहानिधिर्भगवतो देवस्य दग्धुः पुरा
माम्नायेन विशुद्धसत्त्वचरित्रः शिष्योभृगूणां पतिः।
द्रष्टव्यः स च मां दिदृक्षुरपिः च त्यत्तवा ह्रियं मुग्धया
सान्त्रासादयमाभिजात्यानिभृतस्नेहो मयि घोत्यते।। (म.च. 2/18)

यहाँ तपस्वी के प्रति आदर वीर के प्रति सम्मान और मुग्धा सीता के शालीन प्रेम के प्रति आत्मीय अभिव्यक्ति नायक राम के विवेक-शक्ति की परिचायक है।

महावीरचरित के नायक राम का परशुराम के प्रति यह कथन उनके वाङमाधुर्य का परिचायक है। राम कहते हैं -

उत्पत्तिजर्नमदग्निनतः स भगवान्देवः पिनाकी गुरु-
र्वीयं यत्तु न त् गिरां पथि ननु व्यक्तं हि तत्कर्मभिः
त्यागः सप्तसमुद्मुद्रितमही निर्व्याजिदानावधिः
सत्यब्रह्मतपोनिधेर्भगवतः किं वा न लोकोत्तरम्। (म.च. 2/36)

यहाँ राम की प्रियवादिता क्रोधित परशुराम को अपनी वाङ्माधुर्य की धारा में निमाज्जित कर उन्हें द्रवित कर देती है और उनकाद्रवीभाव कोप भाजनराम को राम राम नयनाभिराम... हृदयंगमोऽसि में (2/37) कहकर उनके गुण की अतर्क्य रमणीयता से परशुराम के चित्र को आर्द्रप्रायत्व की अनुभूति से व्याप्त कर देता है। राम प्राणीमात्र के प्रति अपार प्रेम रखते हैं वे प्रजानुरञ्जक राजा का सर्वापरि कर्तव्य मानते हैं, यहाँ तक कि पञ्चवटी के वृक्ष एवं पशु-पक्षी भी उनके बन्धु हैं। उत्तररामचरित में गिरिमयूर और करिकलभ को वे पुत्र के समान मानते हैं, तभी तो करिवल्लभ को 'विजयतामायुष्मान्' तथा गिरिमयूर को 'मोदस्व वत्स मोदस्व' इस प्रकार कह कर आशीर्वाद देते हैं। नाटक के प्रथम अङ्क में वे दो रूपों में प्रेक्षकों के समक्ष प्रस्तुत होते हैं। एक ओर तो वे सीता के प्राणवल्लभ, अनन्य प्रेमी, आदर्श पति के रूप में आये हैं और दूसरी ओर जनानुरञ्जक आदर्श राजा के रूप में आये हैं। एक ओर तो वे सीता के सहज, पवित्र विषय-वासनाओं से परे, अतः अपने ऊपर उनका कुभी भी स्वत्व नहीं है, दूसरी ओर वे एक आदर्श नृपति हैं। मनुष्यों के द्वारा उनके विशुद्ध पावन प्रेम के द्वारा उनका अकलुषित हृदय जीत गया है। यही उनके राज्य की लोकतन्त्रीय व्यवस्था है, जिसकी याद नाटक के प्रारम्भ में महर्षि वसिष्ठ का वह सन्देश याद दिला देता है, जिसमें वे राम से प्रजानुरञ्जन के लिए कहते हैं और उससे अद्भुत यश को ही उनका परम धन बतलाते हैं। वे महर्षि वसिष्ठ के उस सन्देश की हड़बड़ी में एक विचित्र प्रतिज्ञा कर लेते हैं कि-

स्नेहं दया च सौरव्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।[4]

अर्थात् प्रजानुरञ्जन के लिए स्नेह, दया, सुख तथा जानकी को भी छोड़ते हुए मुझे पीड़ा नहीं है। इससे राम की प्रजा के प्रति कर्तव्य भावना तो पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है, परन्तु वे इस हड़बड़ी में की गई प्रतिज्ञा में एक गड़बड़ी कर बैठते हैं कि अपने ऊपर सीता के स्वामित्व को विस्मृत कर सीता पर अपने स्वामित्व को आरोपित कर बैठते हैं। स्थूल रूप में भी जो सीता का परित्याग होता है, वह नाटकीय दृष्टि से लोकानुरञ्जन के लिये ही।

गुप्तचर दुर्मुख अमंगल सूचक कष्टप्रद समाचार लाया था। जिसका फल यह हुआ कि सीता का परित्याग राम को करना पड़ा। राम सीता के प्रति अखण्ड विश्वास रखते हैं। वे अग्निशुद्धि की वार्ता सुनकर सीता से क्षमायाचना करते हैं। उनकी दृष्टि में सीता अग्नि तथा गङ्गाजल से भी पवित्र है। सीता के प्रति उनके मन में अगाध प्रेम है। रावण के द्वारा सीता के अपहरण कर लिये जाने पर राम इतने रोते हैं कि उनके दुःख से पत्थर भी रोने लगते हैं और व्रज का हृदय भी दो टूक हो उठता है। राम को सब कुछ सह्य है, यदि परम असह्य है तो वह सीता का वियोग।

उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरैः।
तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।।[5]

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि जहाँ वे एक ओर आदर्श राजा हैं तो दूसरी ओर एक आदर्श पति भी हैं। वे यज्ञ में सहधर्मचारिणी के रूप में हिरण्यमयी सीता प्रतिकृति को ही नियुक्त करते हैं -

हिरण्यमयी सीता प्रतिकृतिर्गृहिणीकृता।[6]

पंचवटी के एकांत में राम यह स्वीकार करते हैं कि सीता को छोड़ने का कारण यह नहीं था कि वे उस पर प्रेम नहीं करते थे या उन्होंने उस पर प्रेम करना बंद कर दिया था। प्रजानुरंजन उनके कुल का प्रण था कठोर कर्तव्य के लिऐ राम को प्रेम की बलि देनी पड़ी किंतु संस्कारगत आवश्यकता होने पर भी उन्होंने दूसरी पत्नी ग्रहण नहीं की।

राजा प्रजानुरञ्जन के लिए सदैव कठोर से कठोर कार्य करने के लिए तैयार रहते हैं। शूद्र मुनि का वध वे प्रजा के हित के लिए ही करते हैं। शूद्र मुनि का वध वे प्रजा के हित के लिए ही करते हैं।

4 उत्तररामचरित, 1/12, पृ. 156
5 उत्तररामचरित, 1/13
6 उत्तररामचरित, द्वितीय अङ्क, पृ. 247

शम्बूको नाम वृषलः पृथिव्यां तप्यते तपः[7]

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रजानुरञ्जन के लिये वे अकरणीय कार्य को भी सहज रूप में कर डालते हैं। यदि ऐसा न होता तो वे सीता जैसी आदर्श पत्नी का परित्याग तथा शूद्र मुनि का वध क्यों करते? यद्यपि राम जनता की इच्छा से सीता का परित्याग कर देते हैं, परन्तु सीता के पत्यिाग से उनके ऊपर क्या बीतती है, वे असह्य सीता की विरह वेदना से व्याकुल हो उठते हैं। उनकी आन्तरिक असह्य पीड़ा का अनुमान निम्न श्लोक द्वारा लगाया जा सकता है –

दलति हृदयं शोकोद्वेदगाद् द्विधा तु न भिद्यतेः
वहति विकलः कायोमोहं न मुञ्चति चेतनाम्।
ज्वलयति तनूमन्तर्दाहः करोति न भस्मसात्
प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्।।[8]

राम सीता के वियोग को भी किसी प्रकार से सहन कर असाधारण धैर्य का परिचय देते हैं। सीता को नष्ट हुए 12 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, परन्तु राम अभी जीवित हैं। इससे अधिक धैर्य क्या हो सकता है? राम सीता वियोग दुःख को अपने हृदय में छिपाते रहते हैं, स्वयं व्यथित होते हैं, अपने दुःख को किसी से प्रकट नहीं करते हैं। उनका करुणरस पुटपाक प्रतीकाश है –

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशे रामस्य करुणो रसः।।[9]

इससे राम की गम्भीरता अभिव्यक्त हो रही है।
राम का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली है। उन्हें देखकर सहसा ही सभी प्रभावित हो उठते हैं। लव राम को देखकर मन ही मन कहने लगता है कि ये महापुरुष पवित्र सामर्थ्य और दर्शन से युक्त हैं।
महावीरचरित में राम अपनी विनम्रता दिव्यास्त्र प्राप्ति अवसर पर दिखाते हुए कहते हैं –

विश्वामित्राप्राप्य विश्वस्यमित्रात्पुण्यैर्युष्मानघ रामः कृतार्थः।[10]

इस प्रकार 'गुरौ विनम्रता' की शालीन शक्ति-साधना से नायक राम दिव्यास्त्र समुदाय से सम्पन्न होकर अद्‌भुत कार्य करने के आत्मविश्वास से सम्पन्न हो गए। परञ्च उनमें अभी भी उतनी ही विनम्रता है।

उपसंहारः उपर्युक्त अनुशीलनानुसार भवभूति के राम एक आदर्श पति, आदर्श नृपति हैं। उनके धीरोदात्त व्यक्तित्व में शील, गाम्भीर्य, सदाचार मानवता, सच्चरित्रता, कर्तव्यपरायणता एवं करुणा आदि सभी वैशिष्ट्य साकार हो उठे हैं। वस्तुतः भवभूति रामकथा को एक त्रासदी के रूप में प्रस्तुत नहीं करना चाहते थे। किन्तु जीवन में करुणा की केन्द्रीय भूमिका को स्वीकार करके भवभूति निःसंशय रामकथा के सर्वजनीन प्रभाव पर जोर दे रहे हैं। कलाकार के रूप में भवभूति की यह अंतर्दृष्टि प्रशंसनीय है।

सन्दर्भ

1. उत्तररामचरितम् – सं. डॉ. शिवबालक द्विवेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर
2. भवभूति के नाटकों में जीवनमूल्य – डॉ. श्रीमति उर्मिला गुप्ता, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली
3. भवभूति – गो.के. भट, साहित्य अकादमी, दिल्ली
4. महावीरचरितम् – चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी
5. रामकथा के पात्र – डॉ. भ.ह. राजूरकर।

7 उत्तररामचरित, 2/8, पृ. 250
8 उत्तररामचरित, 3/31, पृ. 348
9 उत्तररामचरित, 3/1, पृ. 285
10 महावीरचरित 1/50